Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2021 GISRRJ | Volume 4 | Issue 4 | ISSN : 2582-0095

मैथिली कथा साहित्यमे डॉ. इन्दिरा झाक अवदान

– डॉ. ध्रुवज्योति कुमार सिंह

अध्यक्ष, मैथिली विभाग
साहिबगंज कॉलेज साहिबगंज

Article Info
Volume 4 Issue 4
Page Number : 70-78

Publication Issue :
July-August-2021

Article History
Accepted : 15 July 2021
Published : 30 July 2021

संसारक समस्त जीव–जन्तुकेँ ईश्वर बजबाक लेल मुँह देने छथि आ सभ जीव–जन्तु अपन आवश्यकताक अनुसारेँ बजैत अछि। मनुक्ख एकर अपवाद नहि अछि। मनुक्ख सेहो आवश्यकताक अनुसारेँ बजैत अछि। भलहिँ दोसराक दृष्टिमे आवश्यकतासँ कम वा बेसी बजैत अछि। ई दोसर बात थीक जे लोकक बाजब नीक होइत अछि वा अघलाह। कारण लोक इएह मुँहसँ नीक बात सेहो बजैत अछि आ अघलाह बात सेहो। नीक बातकेँ कर्णप्रिय कहल जाइत अछि आ अघलाह बातकेँ कर्णकटू कहल जाइत अछि। हँ, ई भिन्न गप अछि एकहि बात सभक लेल कटू वा प्रिय नहि भ सकैत अछि। ई बात व्यक्ति–व्यक्तिपर निर्भर करैत अछि। नीक आ अघलाह बातकेँ लऽ कऽ कहलो गेल अछि

सत्यम् ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात्, न ब्रूयात् सत्यम् अप्रियम्।
प्रियं च नानृतम् ब्रूयात्, एष धर्मः सनातनः।।

कोनो बात बाजब, ई तखन सार्थक अछि जखन कियो सुनयबाला होय। असगरमे कोनो बात बाजब सामान्य क्रिया नहि अछि। ई क्रिया असमान्य कहबैत अछि। एहि बातसँ बुझल जा सकैत अछि जे बाजल तखन जाइत अछि जखन कियो सुनयबाला रहय। असगरमे बाजब एकर कोनो उपयोगिता नहि अछि। आब प्रश्न ई उठैत अछि जे बजबाक बेगरता की? की बिनु बजने लोक वा संसारक कोनो जीव बिनु बजने रहि सकैत अछि? एहि प्रश्नपर विचार कयलापर ज्ञात होइत अछि जे संसारक सभ जीव–जन्तु किछु–ने–किछु अवश्य बजैत अछि आ बिनु बजने रहब अत्यन्त कठिन अछि। आब मनमे ई विचार उठैत अछि जे कोनो जीव कखन बजैत अछि? एहिपर जखन विचार करैत छी, त बुझना जाइत अछि जे जखन कोनो विचार, बात मनमे उठैत अछि आ ओकरा दोसरासँ साझा करबाक इच्छा होइत

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

अछि, तखन उपयुक्त व्यक्तिक सोझा अपन बात कहैत छी, कारण सभ बात सभक सोझा नहि राखल जाइत अछि। जेना जे बात पत्नीसँ कहल जाइत अछि ओ बात माय वा बहिनसँ नहि कहल जा सकैत अछि।

जखन मोनमे कोनो विचार उठैत अछि आ ओहि विचारकेँ साझा करबाक लेल जखन उपयुक्त लोक नहि भेटैत अछि, तखन मानकेँ वैचारिक भारक पीड़ासँ निवारबाक लेल ओहि विचारकेँ कलमबद्ध करय पड़ैत अछि। कमलबद्ध करबाक दोसर कारण अछि जे जखन लिखल रहतैक तऽ कखनो ओकरा पढ़ल जा सकैत अछि आ ओहि बातकेँ बुझल जा सकैत अछि। तेँ मानल गेल अछि गुरू आ पोथीक महत्व एक समान अछि कारण दुनूसँ समान रुपेँ ज्ञान प्राप्त होइत अछि।

जखन कोनो व्यक्ति अपन मोनक विचारकेँ कलमबद्ध करैत अछि तखन ओ रचना कहबैत अछि कारण ओकरा रचल गेल छैक। अध्ययनक दृष्टिकोणसँ रचनाक स्वरुपक अनुसारेँ ओकर वर्गीकरण कयल जाइत अछि। जेना–गद्य, पद्य आ चम्पू।

रचनाक स्वरुप अनुसार गद्य एक टा विधा अछि जाहि जे कोनो व्यक्ति अपन मोनमे उठल विचारादिकेँ लिखैत अछि। गद्य रचना भाषाक व्याकरणक अनुशासनसँ अनुशासित रहैत अछि अर्थात गद्यमे शब्द–क्रम व्यवस्थित रहैत अछि।

गद्यकेँ सेहो अध्ययनक दृष्टिकोणसँ कतेको भागमे वर्गीकरण कयल गेल अछि। जेना– कथा, उपन्यास, नाटक, निबंध आदि। गद्यक एहि सभ विधामे स्वरूपगत भिन्नता रहैत अछि।

पद्यकेँ सेहो अध्ययनक दृष्टिकोणसँ वर्गीकरण कयल गेल अछि। जेना– छन्दबद्ध पद्य आ छन्दमुक्त पद्य। छन्दबद्ध पद्यमे छन्द अनुशासनमे रहैत अछि आ छन्दमुक्त पद्यमे ई अनुशासन रहैत अछि जे एकरा छन्दसँ मुक्त राखल जाय। एहि श्रेणीमे आजुक नव–कविता सभ अबैत अछि आ छन्दबद्धमे प्राचीन कविता सभ अबैत अछि। छन्दबद्ध कविताकेँ स्वरूपक आधारपर दू भागमे विभाजित कयल गेल अछि– खण्ड काव्य आ महाकाव्य।

संसारक सभ भाषामे रचनाकार लोकनि होइत छथि। ई रचनाकार लोकनि अपन रचनासँ अपन–अपन भाषाक संरक्षण–संवर्धन करैत रहैत छथि आ अपन–अपन विचारसँ लोककेँ समय–समयपर

अपन रचनाक माध्यमसँ अवगत करबैत रहैत छथि। पाठक लोकनि सेहो रचनाकारक रचनाकेँ पढ़ि–गुनि अपन ज्ञान–भंडारकेँ बढ़बैत रहैत छथि।

एहि संसारमे लगभग जतेक प्राकृतिक भाषा अछि सबहक स्थान वा क्षेत्र निर्धारित अछि आ ओहि भाषाक नामकरण ओहि क्षेत्रक नामक आधारपर कयल गेल जाइत अछि। एहि संसारमे मिथिला एक क्षेत्र अछि आ एहि क्षेत्रक भाषा मैथिली अछि। एकर नामकरणक संबंधमे कहल जाइत अछि जे प्राचीन कालमे एहि क्षेत्रमे 'मिथि' नामक एक महान लोक छलाह जे एहि क्षेत्रमे वास करैत छलाह आ हुनके नामपर एहि क्षेत्रक नाम 'मिथिला' भेल अछि आ मिथिलाक भाषा मैथिली।

मैथिली भाषापर सबसँ पहिने ध्यान देबयबाला लोक भेलाह यूरोपीय विद्वान कोलब्रुक। एहि संबंधमे डॉ दिनेश कुमार झा अपन पोथी मैथिली साहित्यक आलोचनात्मक इतिहासमे लिखने छथि– "जे भाषा आइ मैथिली नामे जानल जाइत अछि तकर उल्लेख सर्वप्रथम यूरोपीय विद्वान कोलब्रुक द्वारा 1801 ई0मे भेल अछि। डा. ग्रियर्सनक अनुसार कोलब्रुक अपन संस्कृत तथा प्राकृत संबंधी अनुसंधानात्मक निबंधमे मैथिलीक बंगलाक संग संबंधपर विचार कयने छथि तथा ओहि क्रममे ईहो लिखने छथि जे मैथिल भाषाक प्रयोग साहित्यमे नहि होइत अछि। तेँ एहि संबंधमे विशेष लिखब अनावश्यक अछि। एकर पश्चात सिरामपुरक मिशनरी लोकनि अपन सोसाइटीक 1816 ई0क 67म मेमोआयरमे अन्य आर्यभाषा सभक संग तुलना करैत मैथिलीक उल्लेख कयने छथि। मैथिलीक दोसर नाम 'तिरहुतिया' सेहो भेटैत अछि। एकर उल्लेख सन् 1771 ई0क बेलिगत्ती कृत 'अल्फाबेटुम ब्राह्मनिकम'क अम्दुजक भूमिकामे भेल अछि। एहिमे कतोक भाषाफ संग तुरुतियन (Tourutians) अथवा 'तिरहूती'क उल्लेख सेहो भेटैत अछि। एकर अतिरिक्त फैलेन, हार्नले, केलॉग तथा ग्रियर्सन सदृश भाषाशास्त्रक विद्वान लोकनिक स्वरचित ग्रंथ सभमे सेहो समय–समयपर एहि नाम सभक उल्लेख भेल अछि किन्तु एकर प्राचीनतम उल्लेख 'आइने अकबरी'मे भेटैत अछि जतय लेखक एकरा एक टा पृथक भाषाक रुपमे स्वीकार कयने छथि। मिथिलामे मैथिली भाषाक हेतु सर्वप्रथम विद्यापति 'देसिल बयना' शब्दक प्रयोग कयलनि–

देसिल बयना सब जन मिट्ठा।
तञ तइसन जम्पओ अवहट्टा।।

हिनक पश्चात 17 शताब्दी लोचन अपन रागतरंगिनीमे विद्यापति पदावलीक भाषाक हेतु 'मिथिलापभ्रंश' शब्दक प्रयोग कयने छथि–

दश्येामपि स्वदेशीयत्वात् प्रथमं मिथिलापभ्रंशभाषया।
श्री विद्यापति कवि निबद्धास्ता मैथिली गीतगतयः प्रदर्श्यन्ते।"[1]

मैथिली भाषामे प्राचीनतम उपलब्ध ग्रंथ थीक– कवि शेखराचार्य ज्योतिरीश्वर कृत 'वर्णरत्नाकर'। ई ग्रंथ गद्यमे लिखल अछि। एहिसँ अनुमान लगाओल जाइत अछि जे एहिसँ पूर्व ग्रंथ सभक रचना कयल जाइत होयत मुदा मिथिलाक भगौलिक बनाबट देखलासँ ज्ञात होइत अछि जे एहि ठाम नदीक अधिकता अछि आ तैँ एहि क्षेत्रमे बाढ़िक प्रकोप अबैत रहैत अछि। आजुक विज्ञानक समयमे जखन प्रतिवर्ष मिथिलामे बाढ़िक प्रकोप देखबामे अबैत अछि तऽ ओहि समय केहन भयावह दृश्य होइत हेतैक तकर सहजहि अनुमान लगायब कठिनाह बुझना जाइत अछि। प्राकृतिक आपदाक समय लोक अपन जान–मालक सुरक्षामे रहैत अछि। ओहि समय अपन रचनाकेँ सम्हारबाक होश ककरा रहैत छैक? तैँ प्राचीन साहित्यक उपलब्धताक कोनो प्रश्ने नहि उठैत अछि।

ज्योतिरीश्वरक रचनाक आधारपर कविकोकिल महाकवि विद्यापति अपन रचना कयने छलाह आ हिनक अनुकरण गोविन्ददास अपन कवितामे कयने छथि। विद्यापति पहिल मैथिल लोक छलाह जे कथा लिखने छथि मुदा भाषा संस्कृत अछि। 'पुरुष–परीक्षा' पोथीमे नीतिपरक अनेको कथा संग्रहित अछि। हुनक समयमे मिथिला संस्कृतक अध्ययन–अध्यापनक लेल प्रसिद्ध छल। एहि ठाम बंगाल, आसाम, उड़िसा आदि कतोको प्रदेशक लोक शिक्षा ग्रहण करबाक लेल अबैत छलाह आ विद्यापतिक गीत सभकेँ सुनि कऽ, सीख कऽ, अपन घर घुरैत छलाह। मैथिली भाषा जकरा विद्यापति 'देसिल बयना' कहने छथि, एकरा प्रति लोकक सोच दोसर छल। एहि भाषामे साहित्यक रचना करब लोक नहि बुझैत छलाह। तैँ मैथिली भाषामे कोनो ग्रंथ उपलब्ध नहि अछि।

आधुनिक कालमे कवीश्वर चंदा झा पहिल लोक भेलाह जे मैथिली भाषाक माध्यमसँ कथा विधाकेँ पाठकक सोझा अनलनि 'पुरुष–परीक्षा'क अनुवाद कऽ कऽ। हिनक अनुवाद–कार्य देखि कऽ तत्कालीन विद्वान लोकनि प्रभावित भेलाह आ नव बाटपर चलबाक लेल साकांक्ष भेलाह। एकर परिणाम भेल जे आओरो साहित्यकार लोकनि आनो–आन भाषा सभसँ अनुवाद कऽ कऽ मैथिलीक साहित्यक भंडारकेँ भरय लगलाह। एहि क्रममे "म0 म0 मुरलीधर झाक मित्रलाभ हितोपदेश (1966–29)

महाभारतक अनुशासनपर्व (1906), बाबू क्षेमधारी सिंहक 'शकुन्तला (1918), डा0 उमशमिश्रक 'नलोपाख्यान' (1919) ओ 'यक्ष–पाण्डवसंवाद, त्रिलोचन झाक 'उद्योगपर्व', गणनाथझाक 'आदि–पर्व'क अनुवाद प्रभृतिक चर्चा कयल जा सकैत अछि। एहि अनुवादक परंपरामे पश्चात जे कार्य भेल से अपेक्षाकृत अधिक सफल भेल। एहि वर्गमे भुवनजीक 'मेघदूत'क, जगदीशमिश्रक 'वाल्मीकीय रामायण'क, छेदीझाक 'कादम्बरी'क, जीवनझाक 'नैषध' प्रभृतिक चर्चा कयल जा सकैत अछि। संस्कृत–कथाक आधारहि पर मौलिक ओ भावानुवादक मध्य–मार्गीय कार्य सेहो भेल अछि। एहि वर्गमे लालदासक 'पतिव्रताचार', म० म० मुरलीधरझाक 'अर्जुन तपस्या', पं० त्रिलोचनझाक 'शकुन्तलोपाख्यान', रामबिहारीमिश्रक अनेक पौराणिक कथा, गंगाधरमिश्रक 'एक प्राचीन समयक राजा शशांक प्रकाश', कुलानंददासक 'नलदमयंती' आदिक चर्चा होएत मुदा एहि श्रेणीमे रमानंद ठाकुरक 'संक्षिप्तमहाभारतसार' (1920) ओ प्रो० तंत्रनाथझााक 'हितोपदेशसार'क विशेषरुपसँ उल्लेख कए सकैत छी। एहि प्रकारक अनुवाद दृष्टिएँ 1967 ई०मे प्रकाशित पं० राजेश्वरझाक 'उर्वशी' ओ 'विद्याधरकथा'क सेहो विशेषरुपसँ उल्लेख कए सकैत छी; कारण, एहि अनुवादमे मैथिली गद्यक स्वभावक रक्षा भेल अछि तथा कथा कहबाक रीतिमे रोचकता आएल।"[2]

"कथाक आरंभिक विकासमे संस्कृतक अतिरिक्त अंग्रेजी ओ बंगलाक कथाक अनुवाद सेहो बड़ योगदान देलक। अंगरेजीसँ इसोपक नीतिकथा (दूइ गोट), शेक्सपियरक 'टेम्पेस्ट'क 'कमला', गोल्डस्मिथक 'बेकफिल्ड पादरी' ओ जानशनक 'राजकुमार रसेलस' आदिक अनुवाद कएल रमानंद ठाकुर, वैद्यनाथ चौधरी, डॉ० उमेश मिश्र, दीनानाथझा प्रभृति। तहिता बंगलासँ अनूदित भेल शिवनंदन चौधरी द्वारा 'कपालकुंडला' ओ 'मृण्मयी', काशीनाथझा द्वारा 'मायाशंकर', 'युगलांगुरीय' ओ राजपूतजीवन संध्या', जीवछमिश्र द्वारा विचित्र रहस्य, छेदी झा द्वारा 'महाराष्ट्र जीवन–प्रभात' ओ 'सीतावनवास', सुमन जी द्वारा 'दर्षपूर्ण', निष्कृति' ओ 'युगलांगुरीय', भुवनजी द्वारा 'विषवृक्ष', श्रीव्यास जी द्वारा 'बाभनकबेटी' आदि आदि। एमहर आबि अन्यान्य भारतीय भाषाक अतिरिक्त रूसी भाषाक उत्कृष्ट कथासभकेँ, विशेषतः टालस्टायक कथाक अनुवाद करबा दिस अधिक प्रवृत्ति देखि रहल छी। एहि क्षेत्रमे श्री गंगानाथझा, श्री हंसराज, प्रो० रमाकान्त मिश्र, विनयगोपालझा प्रभृतिक कार्य–उल्लेखनीय भेल अछि।"[3]

"द्वितीय उत्थान (1950–60)मे लब्धप्रतिष्ठ अग्रगण्य गल्पकारलोकनिमे श्री गोविन्द चौधरी ('पांचजन्य, 'रूपगर्विता') व्रजकिशोरवर्मा, श्री गोविन्दझा, अमरजी (संग्रह–'जलसमाधि'), डा. शैलेन्द्रमोहनझा, डा. बी.झा ('लाटरी', 'पियास'), रामकृष्ण झा किसुन, प्रो० प्रबोधनारायणसिंह, प्रो० रमाकान्तझा, प्रो० धनेश्वरझा, भवनाथझा, राधाकृष्णझा 'बहेड़', प्रो० मायानंद मिश्र संग्रह ('भांगक लोटा', 'आगि, मोम आ पाथर' एवं 'चन्द्रबिन्दु'), ललित (सं० 'प्रतिनिधि'), राजकमल (सं० 'ललकापाग', 'निरमोही हमर बालम'), सोमदेव, हंसराज (सं०– 'सतंजा' ओ 'जे किने से'), प्रो० इन्द्रानंदसिंह (सं०– 'खड़िकाक हिस्सक'), कृष्णगोविंदझा, गोविंदमाधवझा, कल्पनाशरण, जयानंद, डा. रामदेवझा (सं०– एक खीरा : तीन फाँक', 'मनुक संतान', 'धरतीमाता'), श्रीरमानंद रेणुक (सं०– 'कचोट', 'त्रिकोण' एवं 'अन्तहीन आकाश') प्रभृतिक नामोल्लेख कएल जा सकैत अछि।"[4]

स्वतंत्रताक बाद महिला लोकनिमे लेखनक प्रति जागरण आएल। ओहो लोकनि अपन अधिकार आ कर्त्तव्यसँ पूर्ण परिचित भेलीह। फलतः महिला कथा लेखिका लोकनि अपन अप्रतिम रचना प्रतिभासँ मैथिली कथा साहित्यमे योगदान देबए लगलीह।

मैथिली साहित्यमे महिला लेखिकाक संख्या आंगुर पर गनल अछि। लिली रे, चित्रलेखा देवी, गौरी मिश्र, नीरजा रेणु, पद्मश्री डॉ. उषाकिरण खान, नीता झा, सुशीला झा, वीणा ठाकुर, कमला चौधरी तथा इन्दिरा झा आदि महिला कथा लेखिका कथा विधापर अपन लेखनी चलौने छथि आ एहिमेसँ अधिकांश एखनो अपन–अपन कथासँ मैथिली साहित्यक श्रीवृद्धिमे लागल रहैत छथि।

डॉ० इन्दिरा झा मैथिली साहित्यक श्रीवृद्धिमे महत्वपूर्ण योगदान देलनि अछि। हिनक तीन गोट कथा–संग्रह प्रकाशित अछि जाहिमे पहिल अछि– कठ जिब नारि सामि बिनु जीव – प्रस्तुत ग्रंथ हिनक कथा–संग्रह अछि। एहि कथा–संग्रहमे "कर्त्तव्य बोध, समांगक देवता, परिजन, परिचित, चिट्ठी भायक नाम सँ, मायक मोह, मा.....छ, अपराजिता, मोनक बात, कचोट, आजुक भोर, निर्णय, एक पहरकेर नाटक, डायरीक ओ पृष्ठ, निर्दोष, अद्भूतानन्द, रिफ्यूजी, दोषी के ? आ स्टाफ रूम"[5] कथा संग्रहित अछि। ई पोथी स्वाति प्रकाशन, लंगरटोली, पटनासँ 2008 ई.मे प्रकाशित कराओल गेल अछि।

दोसर कथा–संग्रह अछि– अंतहीन आकाश – प्रस्तुत ग्रंथ अंतहीन आकाश कथा ग्रंथ अछि। एहि कथा–संग्रहमे "जानकीनाथ, मनी मनी ओ हनी, सुन्नरि चललीह पहु घर ना,, चरित्र प्रमाण–पत्र, कमला मौसी, गोल्डेन जुबली, सूपन भगत, गीत–जीत, अग्रिम जमानत , नोटबंदी, अनाम बेटीक स्मृति मे , अंतहीन आकाश, अथ उमा कथा..., व्यस्त छी..., ग्लोब अपार्टमेंट, महावीर, कैम्पस,

अपन–अपन भाग्य, सहोदरा, तेसर कनियाँ, पत्नी व्रत, फुद्दी लाल"[6] कथा संग्रहित अछि। ई पोथी स्वाति प्रकाशन, लंगरटोली, पटनासँ 2016 ई.मे प्रकाशित कराओल गेल अछि।

तेसर कथा–संग्रह अछि– नीलिमा– प्रस्तुत ग्रंथ कथा–संग्रह थिक। एहि कथा–संग्रहमे "कृष्णकली, पाँच जोड़ी आँखि, सेविका अब्दुल भाइ, मिथिलाक बेटी, मोक्ष, एक दिनक बात, माधव तोहें जनु जाह विदेश, इहो पुरुष अलवत्ते, कार्यालय संस्कृति, सीख, चुप–चाप, दोष ककर?, नीलिमा, भाग्योदय आ मैथिल प्रेम कथा"[7] संग्रहित अछि। ई पोथी स्वाति प्रकाशन, लंगरटोली, पटनासँ 2021 ई. मे प्रकाशित कराओल गेल अछि।

'कठ जिव नारि सामि बिनु जीव' शीर्षक कथामे सीमा नामक स्त्री पात्रक जीवनक संघर्षक वर्णन अछि। हुनक पति वरूणक अकाल मृत्युक पश्चात जीवनक रंग बदलि गेल छलनि। अपन पतिक अकस्मात् मृत्यु भऽ गेलासँ घर–गृहस्थीक सभ जिम्मेदारी हुनकेपर आबि गेलनि। अपन पैघ आघातकेँ सहि कऽ आत्मनिर्भर बनबाक प्रयास कयने छलीह आ नौकरी ज्वाइन कऽ लेलनि।

एहि कथामे पतिक मृत्यु बादक नारीक संघर्षकेँ देखाओल गेल अछि जाहिमे सामाजिक स्थितिकेँ तँ छोड़ि दिअ, अपन घर–परिवारक लोक सीमाक प्रत्येक गतिविधिपर नजरि रखैत छथि। सामाजिक कटाक्ष सुनि कऽ हुनक हृदयपर चोट पहुचैत छनि मुदा ओ मान–अपमानकेँ समान बुझैत छथि। मानल जे स्वामी नारीक सुरक्षा कवच होइत छथि मुदा स्वामीक नहियो रहलापर ओ नारी अपन आत्मविश्वासक संग विषम परिस्थितिक सामना कऽ सकैत छथि।

एहि कथामे लोक सीमाक समस्या नहि बुझऽ चाहैत छथि। कतेक–कतेक कमेन्ट सुनि कऽ हृदय क्षत–विक्षत भऽ जाइत छनि। परिजनक लांछना अपमान ओ उपेक्षाकेँ सहि लेने छथि।

'कठ जिव नारि सामि बिनु जीव' कथामे लेखिका नारीकेँ कमजोर नहि देखौने छथि। अपन पतिक मृत्युक पश्चात नारीकेँ समाजमे विभिन्न प्रकारक समस्याक सामना करय पड़ैत छैक मुदा विपरीत समयमे सीमाक धैर्य आ आशावादी दृष्टिकोण पाठकक लेल आदर्श ओ सहनशीतलाक अनुपम उदाहरण प्रस्तुत करैत अछि।

'कठ जिव नारि सामि बिनु जीव'क दोसर कथा अछि – 'कर्त्तव्य–बोध'। एहिमे जाहि नारी पात्रक वर्णन अछि हुनक नाम अछि – मधु। एकर कथा–वस्तु एहन अछि जे मधुक पति डॉक्टर रहथिन। हुनका लग समयक अभाव छनि। मधुकेँ एहन बुझाइत अछि जेना ओ एक टा शोभाक वस्तु बनि रहि गेल छथि। एहन नहि अछि जे हुनका कोनो चीजक लुड़ि नै छनि। परिधान डिजाइनक कोर्स

कयने छलीह। भरतनाट्यम सीखने छलीह मुदा हुनक पतिक एहि सभमे कोनो प्रोत्साहन नहि भेटलनि। हुनक पति अनिलकेँ अपन पढ़ाइ आ कमाइ दू टाक अतिरिक्त कथूमे रूचि नहि रहनि।

एहिमे मधुकेँ एहन नारी पात्रक रूपमे देखाओल गेल अछि जे अपन सभ इच्छाकेँ अपना भीतर दबा कऽ अपन परिवारमे ओझरायल रहैत छथि। हुनका बड़ इच्छा होइत छनि जे अनिल हुनका लग बैसि कऽ अड़ोस–पड़ोसक गपशप करथु मुदा ई नहि भऽ पबैत अछि किएक तँ अनिल बेसी चुप्प रहैत छथि।

एहि कथामे एक जगह मधु पतिक पसिन्नसँ राजमा, पूड़ी, कस्टर्ड आ पनीरक तीमन बनौने छथि मुदा अनिल अपन कर्त्तव्यक आगू एतेक विवश छथि जे ओ रतिक भोजन छोड़ि क्लीनिक चलि जाइत छथि। वस्तुतः कथाक नाम 'कर्त्तव्य बोध' चरितार्थ भेल।

एहि कथा–संग्रहमे तेसर कथा अछि – 'समांगक देवता' जे गरीबीक बीच झुलैत पारिवारिक जीवनक चित्र प्रस्तुत करैत अछि। एहि कथामे जाहि नारी पात्रक चर्चा अछि हुनक नाम अछि – बेलाहीबाली। बेलाहीबाली अपन पति बुधना संग हवेलीमे बेगारी करैत अछि। एहिमे बेलाहीबाली जीवनक संघर्षकेँ देखाओल गेल अछि। दुनू पति–पत्नी हवेलीमे मेहनत–मजदूरी कऽ अपन आ अपन दुनू नेनाक पालन–पोषण करैत छथि। दिन–राति मजदूरी कयलाक बादो हुनका उपासे रहय पड़ैत छनि।

एहि कथामे बेलाहीबालीकेँ मन नहियो रहैत तखनो हुनका मालिक लोकनि लग जाय पड़ैत अछि। एहिमे नारी पात्रक जे चित्रण अछि, ओ बड़ मार्मिक अछि। हुनका आस रहैत छनि जे हुनक दिन घुरत अवश्य।

मिथिलामे लोक गरीबीसँ उबि कऽ परदेश पलायन करैत छथि मुदा ओतऽसँ रोगग्रस्त भऽ कऽ गाम अबैत छथि। बुधना एहि कथाक एक टा एहने पात्र अछि जे अपने भुखले रहियो कऽ गिरहतनी द्वारा देल गेल ठकुआ अपने नहि खाइत अछि। ओ अपन छोट बच्चाकेँ खुयबाक लेल बेलाहीबालीकेँ दऽ दैत अछि। बुधना भूखल रहितो मालिकक बेगारी करैत अछि। तहिना बेलाहीबाली सेहो गरीबीक प्रदर्शन नहि करैत अछि। ओ अपन पतिक लेल भगवान दीनानाथसँ काया–समांग मंगैत रोजी–रोटीक उपार्जन करत। लाख कष्ट सहितो ओकरा अपन पतिपर विश्वास छैक। गरीबीक बोझ तरमे दबायल अपन लाचारी सहबाक लेल विवश अछि।

डॉ० इन्दिरा झाक समस्त कथाक गहन अवलोकन कऽ हम एहि निष्कर्ष पर पहुँचैत छी जे समाजक संग सभ कथा सरोकार रखैत अछि। समाज अछि तँ समस्या रहतैक। युग परिवर्तन संग सामाजिक समस्या सेहो बढ़ल अछि। भूमंडलीकरण युगमे लोकक नैतिक पतन सेहो भऽ रहल अछि। नीक लोक अनुभवक अभावमे कोनो गलत संगतिमे पड़ि जीवन नष्ट कऽ रहबाक लेल विवश छथि। संतान सभ उच्च पद पर आसीन भऽ माय–बापक सेवा नहि कऽ पाबैत छथि। कामकाजी दंपतिक संतान नशा सेवी भऽ जाइत छथि। आधुनिक स्त्री सेहो शोषित होइत छथि परिवार द्वारा पति द्वारा। खाटसँ घाट धरि महिला असुरक्षित छथि। शिक्षिता रहथि अथवा अशिक्षित हुनक संघर्षपूर्ण जीवन रहैत अछि। डॉ० झा अपन कथामे नारीवादी स्वर नहि मुखरित कयने छथि अपितु स्त्री जीवनकेँ निकटसँ देखि प्रेरित जीवन जगतसँ सजीव पात्रक चयन कऽ ओकर व्यथा कथा कहने छथि।

संदर्भ ग्रंथक सूचीः–

1. झा, डॉ. दिनेश कुमार : 2012 ; मैथिली साहित्यक आलोचनात्मक इतिहास; मैथिली अकादमी, पटना ; पृष्ठ सं.– 9,10
2. श्रीश, डॉ. दुर्गानाथ झा : 1991 ; मैथिली साहित्यक इतिहास ; भारती पुस्तक केन्द्र, टावर चौक, दरभंगा ; पृष्ठ सं०– 337
3. श्रीश, डॉ. दुर्गानाथ झा : 1991 ; मैथिली साहित्यक इतिहास ; भारती पुस्तक केन्द्र, टावर चौक, दरभंगा ; पृष्ठ सं०– 337, 338
4. उपरोक्त, पृष्ठ सं.– 381
5. झा, डॉ० इन्दिरा, 2008, कठ जिब नारि सामि बिनु जीव, स्वाति प्रकाशन, लंगरटोली, पटना; पृष्ठ संख्या – 0
6. झा, डॉ० इन्दिरा, 2016, अंतहीन आकाश, स्वाति प्रकाशन, लंगरटोली, पटना; पृष्ठ संख्या – 7
7. झा, डॉ० इन्दिरा, 2021, नीलिमा, स्वाति प्रकाशन, लंगरटोली, पटना; पृष्ठ संख्या – 8